भीष्म कुण्ड, नरकातारी

यह तीर्थ कुरुक्षेत्र से 5 किलोमीटर की दूरी पर उत्तरी दिशा में गांव नरकातारी में स्थित है । यहां पर स्थित एक विशाल कुण्ड है जिसे भीष्म कुण्ड के नाम से जाना जाता है ।

भीष्म महाराज शान्तनु एवं गंगा से आठवें वसु के अंश से उत्पन्न हुए । बचपन में इनका नाम देवव्रत था । एकदा दाशराज के पास जाकर अपने पिता की प्रसन्नता हेतु उनकी पुत्री सत्यवती की याचना की । सत्यवती के मनोरथ की पूर्ति हेतु इन्होंने समस्त देवताओं तथा ऋषियों की साक्षी में आजीवन अखण्ड ब्रह्मचारी रहने की भीषण प्रतिज्ञा की । ऐसी भीषण प्रतिज्ञा के कारण ही देवताओं ने इन पर पुष्प वर्षा की तथा इनका नाम भीष्म रखा :

श्रृण्वतां भूमिपालानां यद्बब्रीमि पितुः कृते ।
अद्यप्रभृति मे दाशब्रह्मचर्यं भविष्यति ।
ततोऽन्तरिक्षेऽप्सरसो देवाः ऋषिगणास्तदा ।
अभ्यवर्षतकुसुमैर्भीष्मोऽयमिति चाब्रुवन् ।

(महाभारत, आदिपर्व, 100/94/97)

अपने लिये अपने पुत्र भीष्म के इतने बड़े परित्याग से प्रसन्न होकर इनके पिता शान्तनु ने इन्हें इच्छित मुत्यु का वरदान दिया :

तच्छ्रुत्वा दुष्करंकर्म कृतंभीष्मेण शान्तनुः ।
स्वच्छन्दमरणं तुष्टोददौ तस्मै महात्मने ।।

(महाभारत, आदि पर्व 100/102)

महाभारत के महायुद्ध के प्रथम दिन इन्होंने कौरव पक्ष के सेनापति का पद स्वीकार कर कौरवों को सम्मानित किया । निरन्तर नौ दिनों तक इन्होंने पाण्डव सेना का भीषण संहार किया । दसवें दिन अर्जुन ने कूटनीति व छल का प्रयोग करते हुए शिखण्डी को आगे कर इन्हें अपने बाणों से बुरी तरह घायल कर दिया तथा बाणशय्या पर लेटे हुए भीष्म ने अर्जुन से अपने मुख के सूखने के कारण जल की याचना की । पराक्रमी अर्जुन ने उसी समय अपने गाण्डीव से पर्जन्य अस्त्र से धरती में से शीतल, अमृतोपम एवं दिव्य गन्धयुक्त जल निकालकर भीष्म की तृषा को शान्त किया था :

अविध्यत्पृथिवीं पार्थः पार्श्वे भीष्मस्य दक्षिणे ।
उत्पपात ततोधारा वारिणो विमला शुभा ।
शतस्यामृतकल्पस्य दिव्यगन्धरसस्य च ।
अतर्पयत्ततः पार्थः शीतया जलधारया ।

(महाभारत)

अर्जुन के शक्तिशाली गाण्डीव से वहां धरती पर एक गहरा कुण्ड बन गया । भीष्म से सम्बन्धित होने से ही यह कुण्ड परवर्ती काल में भीष्म कुण्ड के नाम से विख्यात हो गया ।

यहां एक विशाल आयताकार प्राचीन कुण्ड बना हुआ है जिसके निचले भाग तक पहुंचने के लिए सीढ़ियों का निर्माण किया गया है । जनश्रुति के अनुसार भीष्म शरशय्या के समय प्रकट बाणगंगा की कथा की स्मृति को बचाए रखने के लिए उत्तर मध्यकालीन समय में इस कुण्ड का निर्माण किया गया । क्योंकि इस कुण्ड में प्रयोग की गई ईंटें (लाखौरी ईंटें) इस बात की साक्षी हैं । इस कुण्ड के निकट दो नए मन्दिर निर्मित हैं जिसमें भीष्म को शरशय्या पर दिखाया गया है । इस तीर्थ की उत्तरी दिशा में हनुमान की एक विशाल (रंगीन प्रतिमा) भी है ।